1969 के अहमदाबाद के कौमी दंगो का चित्रण ..अग्नि परीक्षा

अहमदाबाद, 1 मार्च ओरिन्ट ब्लेकस्वान नेहमीद कुरैशी व्दारा लिखित अहमदाबाद में 1969 में हुए कौमी दंगो के संबंध की गुजराती पुस्तक अग्नि परीक्षा की प्रसिध्द कल्चरल हिस्टोरियन ,लेखिका और अनुवादक रिटा कोठारी व्दारा अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया है। इस गुजराती पुस्तक का विमोचन अहमदाबाद के कोन्फिलक्टोरियम म्युजियम ऑफ कोनफ्लिक्ट में किया गया था। इस अवसर पर रीटा कोठारी का कहना था, कि अनुवाद का अर्थ मेरे लिए मात्र भाषाकीय या ज्ञानात्मक तौर से बदलाव करना नही है। लेकिन हाल के ज्ञान को फैलाना है। ऐसा अर्त मेरे लिए है, साथ ही उसमें वृध्दि भी हो सकती है। अग्निपरीक्षा हमें हिंसा और अहिंसा, स्टेट और सिविल सोसायटी, स्मृति और साहित्य, राजनीतिक और व्यक्तिगत इस प्रकार से दोनों तरह से समझाने में मदद करती है। जब एक पतली पुस्तक बहुत कुछ कर सकती है तब उनका अनुवाद करना जरुरी होता है। अग्नपरीक्षा वास्तव में गुजरात हाईकोर्ट के वकील हामिद कुरैशी का 1969 के दौरान के अहमदाबाद हुए कौमी दंगो के संबंध के अनुभव का आलेखन है। जब दंगाईयो ने गांधी आश्रम में हमला किया था, हामिद का लालन पालन गांधी वादी विाचरधारा के वातावरण में हुआ था। जिसके परिवार ने देश के लिए और गांधीजी के लिए संम्पूर्ण समर्पण दिया था। दंगो के दौरान प्रथम बार कुरैशी जो तीसरी पीढी के गांधीवादी व्यक्ति है और मुस्लिम हिन्दु महिलाओं से विवाह करे इस ाबत का विरोध करने वाले उन्हें उनेक समुदाय में भी भारी विरोध का सामना करना पडा था, और वैसा देखा जाए तो गांधीवादी विचारो के अनुसार समानता के सामने की चुनौति तब सर्जित हुई थी। इस वास्तविक घटनाक्रम में संयमित होने के ाबवजूद मर्मस्पर्शी कुरैशी ने दंगाग्रस्त शहर क दाब आलेखन किया और गांधी आश्रम के साथ संलग्न अनेक लोगों के विषय में बातें लिखी। भय आर आतंक के वातावरण और अनिश्चितता के बीच उन्होंने और उनेक परिावरों ने हिन्दु मित्र और आश्रम के साथ घरोबा से खुद क अस्तित्व पर भय से सामना करना पडा था। यह संस्मरण मानवत ,मित्रता और गौरव की है, कुरैशी का आलेखन किसी भी प्रकार के कडवेपन या रोष से विहीन होने से वाचक उनके तटस्थभाव से अचंभित हो जाते हैं। अग्निपरीक्षा गुजारती साहित्य का मूल्यवान धरोहर है। और गांधी तथा पीस स्टडीज के लिए मददगार है।